द मोरल प्रॉमिस ऑफ 1989

लेखक - रमिन जहानबेगलो (नूर-यॉर्क चेयरमैन इन इस्लामिक स्टडीज, यॉर्क यूनिवर्सिटी, टोरंटो)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-I (विश्व इतिहास) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

28 नवंबर, 2019

"वेलवेट क्रांति ने गांधीवादी नैतिकता की जिम्मेदारी और मानवीय गरिमा के प्रति प्रतिबद्धता को अपनाया।"

17 नवंबर को चेक सिविक फोरम और स्लोवाक जनता द्वारा आयोजित वेलवेट क्रांति की 30वीं वर्षगांठ मनाई गई, जिसे अंतिम सोवियत-ऑर्बिट शासनों के खिलाफ अंजाम दिया गया था। वेलवेट क्रांति चेकोस्लोवाकिया में सत्ता का एक अहिंसक संक्रमण था। चेक और पोलिश के लोकतंत्र अनुभवों से पता चला है कि पूर्वी यूरोप में लोकतांत्रिकरण मौजूदा राज्य प्रणालियों के ढाँचे के भीतर नागरिक समाजों के स्तर से कम था।

जब 1980 के दशक के असंतुष्ट चेक और पोलिश अपने साम्यवादी सत्तावादी शासन के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे। वे नागरिक समाज की अवधारणा पर लौट आए। नागरिक समाज के बारे में पूर्वी यूरोपीय बुद्धिजीवियों और नागरिक अभिनेताओं ने जो समझा वह यह था कि न केवल कानून के शासन की 18वीं शताब्दी की अवधारणा, बल्कि सार्वजनिक क्षेत्र में क्षैतिज स्व-संगठित समूहों और संस्थानों की धारणा भी राज्य और उसके वैचारिक संस्थानों से अलग एक लोकतांत्रिक स्थान का निर्माण करके राज्य की शक्ति को सीमित कर सकते हैं।

1989 से पहले और पूर्वी यूरोप में उदारवादी मूल्यों के उदय तक, कई पर्यवेक्षकों ने इस क्षेत्र में नागरिक समाजों की कमजोरी के बारे में तर्क दिया है लेकिन यह परिप्रेक्ष्य दो चीजों को भूल गया। सबसे पहला, कम्युनिस्ट शासन की निष्ठुरता जिसने नागरिक असंतोष को किसी भी प्रकार का स्थान नहीं दिया अर्थात कोई मुक्त व्यापार संघ नहीं कोई वास्तविक विरोध नहीं, कोई स्वतंत्र प्रेस नहीं, असहमति का संकेत भी नहीं।

दूसरा, हठी नागरिक समाजों ने पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया जैसे देशों में जो किया, वह चमत्कार था। यहाँ स्टालिनवादी शासन के दशकों के बाद भी छात्रों, बुद्धिजीवियों और कलाकारों ने अपना काम जारी रखा और लोकतांत्रिक विद्रोह के लिए अवसर प्रदान किया।

इसके अलावा चेक अनुभव ने हमें दिखाया कि एक अधिनायकवादी समाज के भीतर भी 'नागरिक बहुलवाद' के लिए एक आधार बनाया जा सकता है। हालाँकि पूर्वी यूरोपीय समाजों में नागरिकता के अन्य रूप मौजूद थे लेकिन इस नागरिक बहुलवाद ने उन असंतुष्टों के लिए एक समृद्ध मॉडल पेश किया जो लोकतांत्रिक परिवर्तन को स्थायी बनाने की मांग कर रहे थे।

यह आश्चर्य नहीं कि पोलैंड में एडम मिचनिक और चेकोस्लोवाकिया में वैक्लेव हैवेल जैसे असंतुष्टों ने पूर्वी यूरोप में नए नागरिक और लोकतांत्रिक राजनीति के लिए स्थान खोले। चार्टर 77 मानवाधिकारों के लिए चेकोस्लोवाक घोषणापत्र, जनवरी 1977 में हैवेल, जॉन पटोका और जिरी होजेक द्वारा जारी किए गए, जिसने 17 नवंबर, 1989 की 'वेलवेट क्रांति' की घटनाओं का मार्ग प्रशस्त किया। हैवेल के राजनीतिक दर्शन को 'सत्य', 'विवेक', 'जिम्मेदारी' और 'नागरिकता' जैसी धारणाओं द्वारा चिह्नित किया गया था।

एक अनिवार्य मूल्य के रूप में सत्य की स्वीकार्यता पर उनका जोर इस बात से उत्पन्न हुआ कि उन्होंने उत्तर-अधिनायकवादी राज्य में 'लिविंग इन ट्रूथ' कहा था। हैवेल ने अपने लेखन में जोर देकर कहा है कि, 'व्यक्तियों को झूठ को स्वीकार नहीं करना चाहिए, उन्हें इस तथ्य को अपने जीवन में समाहित कर लेना चाहिए।"

यह स्पष्ट रूप से एक नैतिक कार्य था, जिसे हेवेल ने 'लिविंग इन ट्रूथ' के रूप में परिभाषित किया था। हेवेल ने 'शक्तिहीन

की शक्ति' के विभिन्न आयामों की जाँच करते हुए सत्य के भीतर रहने के सार का विश्लेषण किया। यह कोई भी साधन हो सकता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति या एक समूह छल योजना के खिलाफ विद्रोह करता है।"

1989 की वेलवेट क्रांति के बारे में सोचने पर किसी को आश्चर्य होगा कि क्या मौजूदा प्रतिमान भी पर्याप्त हैं या नए लोगों को इस ऐतिहासिक घटना का बोध कराना आवश्यक है। तीस साल बाद हमें अभी भी इसके दृष्टिकोण की प्रकृति और इसकी माँगों के दायरे के बारे में जानने की आवश्यकता है। सच्चाई यह है कि हैवेल और 1989 के आंदोलन में शामिल सभी लोगों ने एक नई निरंकुश सत्ता के साथ साम्यवादी शक्ति को बेअसर करने का लक्ष्य नहीं रखा लेकिन शासन की हिंसा को अवशोषित किया और फिर इसके खिलाफ उस ऊर्जा को पुनर्निर्देशित किया।

1989 के चेक प्रदर्शनकारियों ने 'राजनीतिक जिउ-जित्सु' (राजनीतिक लड़ाई शैली जिसमें एक विरोधी की ऊर्जा और स्थिति का उपयोग उनके खिलाफ) की तकनीक को फिर से शुरू किया जो कि सूक्ष्मता की एक सौम्य कला थी, जिसे पहले गैर-सक्रियतावाद के एक अमेरिकी सिद्धांतकार जीन शार्प द्वारा लोकप्रिय किया गया था जो गांधीवादी सत्याग्रह से प्रभावित था।

भले ही हैवेल को यह रणनीति शार्प से मिली हो या सीधे एशियाई मार्शल आर्ट से या खुद ही इसका आविष्कार किया हो लेकिन वह राजनीति के एक नए व्याकरण के उपयोग में बहुत ही रचनात्मक थे।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हैवेल द्वारा सुझाई गई अहिंसात्मक प्रतिरोध, असंतोष और असहयोग की रणनीतियों को उनके द्वारा सत्य के भीतर रहने के अलग-अलग सत्तामूलक मोड़ के रूप में प्रस्तुत किया गया था। 1989 में पूर्वी यूरोप में राजनीति के नैतिक आयाम की गूँज से वे सफल हो गए। हैवेल की अवधारणाओं जैसे विवेक और नागरिकता ने 1989 के नागरिक मानवतावादी आंदोलन के लिए एक अधिक नैतिक नींव को जिम्मेदार ठहराया। हालाँकि यह निर्विवाद है कि हैवेल द्वारा परिकल्पित लोकतांत्रिक आंदोलन और चार्टर 77 के सदस्यों का जन्म 'राजनीति के नैतिकतावाद' के गांधीवादी व्याकरण से हुआ था।

1989 की वेलवेट क्रांति ने मानवीय अस्तित्व की अंतर्निहित नाजुकता और मानव राजनीतिक स्थिति की क्रूरता पर जोर देते हुए जिम्मेदारी की गांधीवादी नैतिकता और मानवीय गरिमा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को अपनाया। इसमें 1989 की बेलवेट क्रांति और उसके नैतिक नेताओं के काम की मौलिकता निहित है, दोनों राजनीतिक शक्ति के यथार्थवाद का सामना करते हैं तथा सही नैतिक और राजनीतिक विकल्प चुनकर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक सीमाओं से परे सच बोलते हैं।

GS World
Committed To Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **वेलवेट क्रांति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. वेलवेट क्रांति चेकोस्लाविया में हिंसात्मक सत्ता परिवर्तन था।
2. यह अंसतुष्ट चेक और पोलिश लोगों के द्वारा साम्यवादी सत्तावादी शासन के खिलाफ संघर्ष था।
3. 17 नवंबर 2019 को इसकी 30वीं वर्षगांठ मनाई गई है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) केवल 2
(c) 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **With reference to the Velvet revolution, consider the following statements:**

1. Velvet revolution was violent power conversion in Czechoslavia.
2. It was a struggle by the Czech and Polish people against communist authoritarian rule.
3. Its 30th anniversary has been celebrated on 17 November 2019.

Which of the above statements is/are correct?

(a) 1 and 2 (b) Only 1
(c) 2 and 3 (d) 1, 2 and 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: 1989 में हुई वेलवेट क्रांति की ऐतिहासिक महत्ता क्या है? इस क्रांति ने किस प्रकार हिंसा बनाम गाँधीवादी नैतिकता को एक बड़े शस्त्र के रूप में व्यवहार में लाया? चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

What is the historical significance of the Velvet Revolution in 1989? Discuss how this revolution used Gandhian ethics as a big weapon versus violence. (250words)

नोट : 27 नवम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (c) होगा।

Committed